Economics - (Hons.)

Part - I, Paper - II

Topic - Inflation

8. मुद्रा-स्फीति से आप क्या समझते हैं। इसकी परिभाषा एवं कारणों का वर्णन करें।

Ans :- साधारण बोलचाल की भाषा में मुद्रा-स्फीति का अर्थ महँगाई से लिया जाता है। जब देश की अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि तथा मुद्रा के मूल्य में कमी आती है तो हम इसे मुद्रा-स्फीति की संज्ञा दी जाती है इसका एक मुख्य कारण वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग का पूर्ति की अपेक्षा अधिक होना है तथा दूसरा अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति अधिक होना है। जब माँग एवं पूर्ति में असंतुलन पैदा होता है तो वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होती है। मूल्यों में इस वृद्धि को मुद्रा-स्फीति कहते हैं।

परिभाषा :- विभिन्न अर्थशास्त्रियों के द्वारा मुद्रा-स्फीति की परिभाषा दी गयी है :- प्रो० पीटरसन के अनुसार :- "विस्तृत अर्थों में मुद्रा-स्फीति से अभिप्राय सामान्य कीमत-स्तर में होने वाले स्थायी और निरंतर वृद्धि से है।"

सैम्युलसन ने इसकी परिभाषा देते हुये लिखा है कि - "मुद्रा-स्फीति से अभिप्राय उस समय से है जिसमें कीमतें बढ़ रही होती हैं।"

शेपीरो के शब्दों में :- "मुद्रा-स्फीति सामान्य कीमत-स्तर में होने वाली निरंतर और अत्यधिक वृद्धि है।"

प्रो० पिगू के अनुसार :- "मुद्रा-स्फीति तब उत्पन्न होती है जबकि मौद्रिक आय उत्पादन के अनुपात में अधिक बढ़ रही हो।"

केमरर का मत है कि - "मुद्रा-स्फीति, मुद्रा या जमा की अधिकता को कहते हैं अर्थात् व्यापार की तुलना में मुद्रा की अधिकता।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुद्रा-स्फीति का तात्पर्य वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में निरंतर वृद्धि से है।

मुद्रा-स्फीति उत्पन्न होने के ~~कारण~~ सिद्धांत :-

(i) माँग-प्रेरित मुद्रा-स्फीति (Demand Pull Inflation) :- माँग-प्रेरित मुद्रा-स्फीति का सिद्धांत मूल्य-वृद्धि का सबसे प्राचीन सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार मुद्रा-स्फीति वह स्थिति है जिसमें वर्तमान कीमत स्तर पर कुल माँग कुल पूर्ति से अधिक होती है। माँग प्रेरित मुद्रा-स्फीति की स्थिति में कुल माँग में वृद्धि होती है परन्तु उत्पादन में माँग की तुलना में कम वृद्धि होने के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि होती है। पीटरसन के शब्दों में - "मुद्रा-स्फीति का कारण वर्तमान कीमतों पर उपलब्ध वस्तुओं एवं सेवाओं की पूर्ति की तुलना में माँग का

Scanned with CamScanner

अधिक होना है।"

(ii) लागत धक्का मुद्रा-स्फीति (Cost Push Inflation) :- Cost Push Inflation मुद्रा-स्फीति का एक नवीन सिद्धांत है जिसका प्रतिपादन 1960 के बाद अमेरिका तथा अन्य विकसित देशों में पायी जाने वाली कुछ विशेष परिस्थितियों के फलस्वरूप हुआ। उत्पादन लागतों में वृद्धि के फलस्वरूप जो मुद्रा-स्फीति उत्पन्न होती है उसे लागत धक्का मुद्रा-स्फीति कहा जाता है। इस स्थिति में सब और वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि होती है जबकि इसकी और उत्पादन एवं रोजगार में कमी होती है। प्रो० एस० ई० हैरिस के अनुसार :- "लागत प्रेरित स्फीति लागतों में होने वाली वृद्धि के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। इस स्थिति में कुल मांग अपर्याप्त होती है। साधन बेरोजगार होते हैं तथा उत्पादन-क्षमता आवश्यकता से अधिक होती है।"

मुद्रा-स्फीति उत्पन्न होने के कारण :-

मांग-पक्ष :- मांग का तात्पर्य वस्तुओं के लिये मुद्रा की मांग से। देश की अर्थ-व्यवस्था में मुद्रा की मांग में वृद्धि के निम्नांकित कारण हैं :-

(i) सार्वजनिक-व्यय में वृद्धि :- जब देश में सार्वजनिक-व्यय में वृद्धि होती है तो उसी देश में क्रय-शक्ति में वृद्धि होती है जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं के मांग में वृद्धि होती है लेकिन उस अनुपात में उत्पादन में वृद्धि नहीं होने के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि होती है।

(ii) घाटे की वित्त-व्यवस्था :- वर्तमान समय में सरकारों द्वारा अपनी आय एवं व्यय के अंतर को पूरा करने के लिये घाटे की वित्त-व्यवस्था का सहारा लिया जाता है जिससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा का प्रसार बढ़ जाता है और लोगों की मौद्रिक आय में वृद्धि हो जाती है परन्तु उत्पादन में उस अनुपात में वृद्धि नहीं होने के कारण मूल्यों में वृद्धि होती है।

(iii) सस्ती मौद्रिक-नीति :- सरकार की सस्ती मौद्रिक एवं साख-नीति के कारण अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है जिसके कारण वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि होती है लेकिन उत्पादन में वृद्धि नहीं होने के कारण कीमतों में वृद्धि होती है।

(iv) व्यय-योग्य आय में वृद्धि :- मुद्रा-स्फीति का एक कारण उपभोक्ता की व्यय-योग्य आय में भी वृद्धि भी मानी जाती है। कुछ लोगों द्वारा जीवन-स्तर को ऊंचा करने के लिये वस्तुओं एवं सेवाओं, विलासिता की वस्तुओं पर अधिक व्यय किया जाता है जिसका इसके लोगों के द्वारा भी अनुसरण किये जाने के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं के मांग में वृद्धि होती है लेकिन उस अनुपात में उत्पादन में वृद्धि नहीं होने के कारण मूल्यों में वृद्धि के फलस्वरूप मुद्रा-स्फीति उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

(v) काला-धन :- काला-धन वह आय है जो गलत तरीके से अर्जित किया जाता है और जिस पर सरकार को कोई कर का भुगतान प्राप्त नहीं होता है। काले-धन को विलासिता की वस्तुओं पर खर्च किया जाता है जिससे माँग में वृद्धि होने से कीमतों में वृद्धि होती है।

(vi) करों की दर में कमी :- जब कभी सरकार द्वारा करों की दरों में कमी की जाती है तो लोगों की वास्तविक आय में वृद्धि के फलस्वरूप प्रभावपूर्ण माँग में वृद्धि होती है। इस अतिरिक्त आय के कारण लोगों के द्वारा अधिक वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग की जाने लगती है जिससे कीमतों में वृद्धि होती है।

(vii) सार्वजनिक-ऋण में कमी :- जब सरकार द्वारा जनता से कम ऋण लिया जाता है या जनता के ऋण को वापस किया जाता है तो लोगों के क्रय-शक्ति में वृद्धि होती है और वस्तुओं के माँग में वृद्धि होने के कारण मूल्यों में वृद्धि होती है।

(viii) जनसंख्या-वृद्धि :- देश की जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग की वृद्धि के अनुपात में पूर्ति में वृद्धि नहीं होने से मूल्यों में वृद्धि होती है।

(ix) निर्यात में वृद्धि :- जब देश से वस्तुओं के निर्यात में वृद्धि होती है तो इसके फलस्वरूप दो कारणों से कीमतों में वृद्धि होती है। प्रथमतः निर्यात में वृद्धि होने से आय में वृद्धि होती है। द्वितीय उपभोक्ता वस्तुओं का अधिक निर्यात होने के कारण देश में उनकी पूर्ति कम हो जाती है जिससे कीमतों में वृद्धि होती है।

पूर्ति-पक्ष :- पूर्ति का तात्पर्य वस्तुओं की वह उपलब्ध मात्रा है जिस पर लोग अपनी आय को खर्च करते हैं। पूर्ति-पक्ष पर मुख्य रूप से निम्न तत्वों का प्रभाव पड़ता है :-

(i) उत्पादन में कमी :- पूर्ति में होने वाली कमी का सबसे प्रमुख कारण उत्पादन में होने वाली कमी है। उत्पादन में कमी कई कारणों से हो सकते हैं जैसे- नई तकनीक का अभाव, श्रमिकों एवं नियोक्ताओं का विवाद, प्राकृतिक आपदायें आदि।

(ii) कृत्रिम अभाव :- जमाखोरी एवं मुनाफाखोरी के द्वारा भी व्यवसायियों के द्वारा वस्तुओं का देश में कृत्रिम अभाव की स्थिति पैदा की जाती है जिससे वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है। जमाखोरी का मुख्य उद्देश्य कीमतों में वृद्धि कर लाभ कमाना होता है।

(iii) सरकार की कर-नीति :- सरकार द्वारा अधिक राजस्व की प्राप्ति के हेतु जब कभी बिक्री-कर, उत्पादन-कर, Excise duty, निगम-कर इत्यादि में वृद्धि की जाती है तो इसका उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे उत्पादन की माँग स्थिर रहने पर भी कीमतों में वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

(iv) खाद्यान्न की कमी :- जब देश में मौसम अनुकूल नहीं रहता है तो ऐसी परिस्थिति में खाद्यान्न के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और खाद्यान्न के कम उत्पादन के कारण खाद्यान्न के कीमतों में वृद्धि होती है जिससे सभी देश में मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है।

(v) औद्योगिक विवाद :- कभी-कभी श्रमिकों एवं मालिकों के बीच विवाद के कारण उत्पादन प्रभावित होता है। जिससे उत्पादन में कमी आती है और कीमतों में वृद्धि होती है।

(vi) कच्चे माल की कमी :- किसी भी वस्तु के उत्पादन के लिये कच्चा-माल की आवश्यकता होती है। यदि देश में उत्पादन में वृद्धि के लिये कच्चा-माल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होती तो उसका उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होती है।

(vii) प्राकृतिक आपदायें :- जब कभी देश में प्राकृतिक आपदायें, जैसे :- बाढ़, भूकम्प, अकाल, महामारी आदि का प्रकोप होता है तो ऐसी स्थिति में विशेषकर कृषि-उत्पादन प्रभावित होता है और वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होती है।

(viii) अन्तर्राष्ट्रीय कारण :- आज के युग में विभिन्न देशों के एक-दूसरे के घनिष्ठ आर्थिक सम्बन्ध होते हैं और इसमें किसी देश में कीमतों में वृद्धि का प्रभाव अन्य देशों पर भी होता है।

(ix) सरकार की आर्थिक-नीति :- सरकार की आर्थिक-नीति का उत्पादन पर जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। यदि सरकार की आर्थिक-नीति प्रतिबंधात्मक है तो इसका उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फलतः उत्पादन में कमी होती है और वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है।

प्रो० देवेन्द्र प्रसाद सिंह
अर्थशास्त्र-विभाग
सोगरा कालेज, विहार शरीफ (नालन्दा)

Scanned with CamScanner